

पात्र-परिचय

पुरुष

१	सूत्रधार	नट, नाटकक निर्देशक ।
२	कंसासुर	दैत्य, मथुराक राजा ।
३	दौवारिक	कंसक द्वारपाल, प्रतीहार ।
४	शत्रुघ्न	नारद मुनि ।
५	वसुदेव	श्रीकृष्णक पिता ।
६	श्रीकृष्ण	परमेश्वर, वसुदेवक पुत्र ।
७	नर्तकगण	नटुआ सभ ।



स्त्री

१	नटो	सूत्रधारक पत्नी ।
२	देवकी	श्रीकृष्णक माए, कंसक बहिनि ।



सुखि श्रीकामत विरचित

॥ श्रीकृष्णजन्म - रहस्य - नाटकम् ॥

सुन्दररक्षणतिदश-लण्डितारिपक्ष-लक्ष-

रक्षित-स्वभक्त-पक्ष-वाटुवहिल-धारिणी ।

हरार्धदेहधारिणी स्वभक्त-भक्त्यकारिणी

मुनीन्द्रवन्द्यतारिणी सदा तनोतु वो मुदम् ॥१॥

(३) तमेवार्थं दृढयति । मालवरागे गीतम्—१)

जय जय भगवति जय^१ भवसारम् ।

तव^२ पदमेव भजाम उदारम् ॥

करसल—कृत-करवाले—विशाले ।

तव - शशि - भूषित सुललित भाळे ॥

समर शमित रिपु निकर कराले ।

चण्ड-मुण्ड लण्डित^३—जयमाले ॥

श्रीकृष्णजन्मरहस्यनाटकक व्याख्या

देवराजक रक्षाकरवा मे अत्यन्त पट, लाली शत्रु के सैन्यके कदवा मे ओ लाली अपन भक्तगणक रक्षाकरवा मे सिद्ध बाहिरूपी लत्तीके धारण कएनिहारि, महादेवक आधादेह के धारण कएनिहारि, सुन्दर भक्तक कल्याण कएनिहारि, मुनिराज लोकनिक कृतकृत्य करएवाली भगवती सतत अहाँसभक आनन्द के बढायवु ॥१॥

(ओही अर्थके पुष्ट करैत छवि । मालवरागमे गीत—१)

हे भगवती ! अहाँक जय हो । अहाँक पर जे संसारक सारस्वरूप (तत्त्व) धिक ओ उदार अछि तकर हमरालोकनि भजन करैत छी । अहाँ हाथ मे

१- रक्षितस्वभक्त । २- तमेवार्थं दृढयति । ३- जय जयवन्द्ये । ४- तव पद मोर परम हित सम्ये । ५- जयजय ।

भूजग विभूषित लोहित—वसने ।
 विकट-दशन लम्बित-वर-रसने ॥
 सजल-जलद इव पूरित - तारे ।
 बहसि कलित शत मणिमय हारे ॥
 सुकवि गणक इह गायति गीतम् ।
 तव चरणे मानसमुपनीतम् ॥

(अपि च श्लोकः) —

विघ्नश्चास्ताऽतिगाहप्रहरणविषये चण्डमार्त्तण्डखण्डः
 'प्रोद्भूताघवजीव-प्रचरणहृग्ने दास्यते दाववह्निः ।
 स्वर्गाधीशाद्यधाम-प्रणमितचरणः 'शैवर्षशास्त्रिहंसः
 स्फूर्जच्चन्द्रावर्तसः 'स्वनयनु कुशलं विघ्नराजो गणेशः ॥२॥

विशाल तरुआरि रखने छी । अहाँक कपार पर सुन्दर मदीन चन्द्रमा छथि ।
 युद्ध मे अहाँ भयानक शत्रुक समूह के शान्त करैत छी, चण्ड ओ मुण्डके काटि
 विजयक माला पहिरने छी, साँप सँ शोभित लाल वस्त्र पहिरने छी, विकराल
 दाँत ओ नमड़ल जीह अछि, पानिभरल मेघ मे तारा सभ जेता भरल रह्य
 तहिना सेयो मणिक हार के धारण कएने छी । सुकवि गणक (ज्योतिषी कवि
 छाल) एहि गीतके गबैत छथि ओ अपन मन के अहाँक चरण पर समर्पित
 कएने छथि ॥

(आओरो श्लोक) —

विघ्नरूपी गहन अन्हार के मारधा मे प्रचण्ड सूर्यमण्डल, उत्पन्न भेल
 पापक समूहक गहन प्रचार मे दास्य दावानल (वनक अग्नि), स्वर्गक राजा
 इन्द्र ओ विष्णु सँ पूजित चरणबला, शिवक वंश रूपी समुद्र मे हंसक समान,
 चमकैत चन्द्रमाक गहनावला विघ्नक अधिपति गणेश कुशलदायक शब्द
 करथ ॥२॥

६—प्रोद्भूतघनजीवदुःखगहने दास्यनिधयदायकः । ७—सौरभं सास्त्रिहंसाः (?) ।

८—सुनयतु ।

(नान्यथे)

सूत्रधारः—अलमतिविस्तरेण : (परिमोऽवलोकय) अहो ! महद्विलक्षणा रङ्ग-
 भूमिकाऽवलोकयते । (पुनः स्तौति ।) —

महाप्रतापशालिनी नृपाधिपालिपालिनी
 स्फुरद्गुणानुरागिका^१, विभाति रङ्गभूमिका ।
 प्रिये ! विधेहि सादरं, तदत्र कीतुकं परं
 महोप-कंस शासिता, सभा मुदेन भासिता ॥३॥

(ततः प्रविश्य नटी वदति ।)

नटी—वन्दानि अञ्जजत्^२ । अञ्जजत् ! एषा संविता^३ आअद्विष्टा ।
 यधानवेदि अञ्जो । [वन्दे आर्यपुत्रम् । आर्यपुत्र ! एषा संविता
 आगतास्मि । यथाज्ञापयति आर्यः ।]

सू०—प्रिये ! एषा कंसमहाराजस्य महती सभा । अत्र निजगुणान् समदर्शय ।

^१अष्टपात्र - प्रवेशकेन नृत्येन राजानमनुरञ्जय—

(नान्योपपद्यक वाद)

सूत्र०—विशेष विस्तार उचित नहि । (चारुभर देखि) अहो ! अत्यन्त विल-
 क्षण रङ्गमञ्च देखि पड़ेछ । (फेर स्तुति करैत छथि) —

महान् प्रताप सँ युक्त, राजाधिराजक द्वारा सम्पोषित, प्रकाशित गुणक
 अनुराग भरल ई सादरपरिपद् शोभित भए रहल अछि । ते हे प्रियो
 एतए आदरपूर्वक अत्यन्त रोचक अभिनय प्रस्तुत करू, किएक तँ ई
 राजा कंसक द्वारा शसित सभा आनन्द सँ परिपूर्ण अछि ।)

(तखन प्रवेश कए नटी वजैत छथि ।)

नटी—आर्यपुत्र के प्रणाम करैत छी । आर्यपुत्र ! इयेह तैयार भए आएलि छी ।
 जे आर्यक राजा हो ।

सूत्र०—प्रिये ! ई कंसमहाराजक पैघ सभा थिक । एतय अपन गुणसभके प्रद-
 शित करू । आठ पात्रक प्रवेश बला नृत्य सँ राजाके प्रसन्न करू—

६—गुणानुरागिका । १०—वस ! । ११—आअद्विष्टा यधानवेदि । १२—अष्टो ।

(दोहा) —

हमे^{१३} नट मारिष, तू^{१४} नटी, कृष्ण नारद, कंस भूप ।
वसुदेव, देवकी, भरथगण, मोहन ब्रह्मस्वरूप ॥१॥

(ततो नटी नेपथ्ये उवाचैव सकल-मङ्गल-पदा-योजितं १४ गीतं पायति ।)

(नान्दी आसावरी-रागे [गीतसं०-२])

जय [जय मङ्गल] देव विघनेशे ।
करिवर मुख दुख हरण गणेशे ॥
आपद - तिमिर तरनि - अवतारे ।
१२पातक गहन दहन अन्धकारे ॥
विघन मुदित जनि मारुत लोले ।
गलित सशत मद लसित कपोले ॥
सुरनायक - मुनि - सेवक चरने ।
निज - गन - जन मन १६कानुख हरने ॥

हम अभिनेता सूत्रधार रहव, अहाँ नटी, नारद मुनि, राजा कंस,
वसुदेव देवकी, नर्तक सभ ओ ब्रह्मस्वरूप श्रीकृष्ण ॥१॥

(तखन नटी नेपथ्य मे बीसि सभ मङ्गल पद सँ युक्त गीत गवीत छथि) —

(नान्दी आसावरी रागमे गीतसं०-२)

विघनेशे = विघनक राजा गणेश । करिवरमुख = हाथीक मुँह बला ।
आपद = विपत्तिरूपी अन्धकारक हेतु सूर्यक अवतार । पातक = गहन पापक हेतु आगि । विघन = विघन वा विजिष्ट घन (मेघ) । मारुत लोले = चञ्चल वायु (विघनस्वरूप मेघ के उधिरएवा मे) । गलित

१३ - हमे ।

१४ - पथमायोजित । १५ - पावु खगहनदहन । १६ - कानुख ।

बुझि विभूवनपति हम बुझ दासे ।
अनुपल पुरिअ अभिमत आसे ॥
सुकवि गणक भन सुनि उपदेसे
सकल सभा सुभ करथ गणेशे ॥

कंसासुर — (आकर्ष्य) अहो ! महद्गुणवाणीव लक्ष्यते ।

(इति श्रुत्वा उपसृत्य नर्तिकाः कथयन्ति ।)

नर्तिकाः — १३ जय महाभाग महाराज !

कंसासुर — विलासयुक्त नृत्यं कुरु ।

(नर्तिकास्तथा कुर्वन्ति ।)

(काचित् प्रफुल्लारविन्दवदना कमपि मनोहरं निजतनुजमुखं दास्यामी-
त्युक्तवती इदानीं माऽङ्गीकरोति । तत्र कापि सखी तां मधुकर-मालती-
ध्याजेन कथयति)

(श्लोक) —

= सतत चरीत मद (हाथीक भट्टी) सँ शोभित मालबला । सुरनायक

= दृष्ट ओ मुनिशभ चरणक सेवक छथि। निज = अपन भक्त सभक मनक दुख हरण करैत छथि ॥

कंसासुर — (सुनि) अहो ! महान् गुण सँ युक्त वाणी जकां बुझाइछ ।

(ई सुनि नर्तकसभ लग जाए कहैत अछि ।)

नर्तकसभ — जय महाभाग महाराज ।

कंसासुर — विलासयुक्त नृत्य करह ।

(नर्तिका सभ तहिना करैछ ।)

केओ फुलाएल कमल सन मुँहवाली कोनो पुरुष केँ 'सुन्दर
अपन देहसँ उत्पन्न सुख देब' ई गद्यने छल, मुदा एखन नहि स्वी-
कार करैछ, ततए केओ सखी ओका भीरा ओ मालतीक लखे
कहैत छैक । श्लोक —

१७ - कथमाय (?) ।

तो पीतं मधुपेन पञ्चजदले, तो था कदम्बरु मे
 १८ मारम्भं न दृश्यापि वीक्षितमथ प्रीडाभिमाने सति ।
 स्वामेकं बहुचिन्तयन्नुपगस्तस्मैव चेत् तोष्यसे
 कोऽन्यस्तस्य मधुघ्नस्य क्षरणं, कस्त्यदगुणग्राहकः ॥४॥

(श्लोकार्थे गीतम्--३)

मधुकरमनुज १९ मालति । मगसिज-सुखमपह्नाय २० ।
 गायति तव गुण-गौरवमनुपलमखिलमुखाय २१ ॥
 अवधारय मधुचञ्चलमनु - मानहृदयेन ।
 ब्रज मधुसूदनमभि खलु, विरहिण मह २२ सरसेन ॥
 अधिवशमपिरसदामिति ! सकल-कलाचतुरेण ।
 २३ गुणवति ! भज भवभूषणमविकार २४ भ्रमरेषु ॥

भोरा, ने कमलक रसी पर आ ने कदम्बक गाले पर
 पराग पिबलक, ने फूलक रस के ओखियो सँ देखलक। उक्तक अभि-
 लावा भेला पर केवल तोहरहि बहुत प्रकारे चिन्तन करैत अएलह
 अछि । हे मालती ! ओकरा नै समुष्ट नहि करैत छहूँ ओ मधु-
 घ्नत भोराक आन के क्षरण होयतैक आ तोहरो गुणक ग्रहण कएनि-
 हार दोसर के होएतह ? ॥४॥

(श्लोकक अर्थ मे गीत—३)

हे मालती ! तौ कामसुख के छोड़ि भोराके सनावह । ओ हरदम
 तोहर गुण तथा गौरवके सकल सुखक हेतु गवैत छह । अपन देहक मान सँ
 रहित हृदय सँ ओहि मधुक प्रति चञ्चल भोरा के चिन्हह । एतय ओहि
 विरही मधुसूदनक लग सरसता सँ जाह । हे अधिक रस देवदवाली ! सकल
 कलामे चतुर भ्रमरसभ मे विकार रहित तोहर वशीभूत जे तोहर ई संसारक

१८ - साकम्भ । १९ - मनु लय । २० - हाए । २१ - लाए ।
 २२ - विरहिणिमिह । २३ - गुणमति भज । २४ - अविकारभ्रमरेषु ।

२५ आलोक्य तिलपालिनि ! सपदि सदा नयनेन ।
 २६ स्वहृदि निधाय समागमनमुदरं तं शयनेन ॥
 कुरु विकसितमतिसुन्दरमाननमधिकसुखेन ।
 भवति विलासिनि ! हितमिह गणक-ललित-वचनेन ॥

कयासुरः—(चिह्नस्य शिरःकम्पं धिक्वाय) साधु, साधु !!

(वश्यङ्गुलीयकं गर्भाकाय ददाति ।)

(नर्त्तिकः सादरं गृह्णाति गृहीत्वा च प्रचलितः ।)

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।)

[इति प्रस्तावना]

(अत्रान्तरे प्रविशति धामंशः)

(देशीयरामे गीतम्--४)

अएलहुँ देवसमाज सँ आज ।

कंस महीपति मीलन काज ॥

भूषणस्वरूप भ्रमर तकर मभीप हूँ गुणवती । तौ जाह । हे तिलवाली ! अट-
 वए अपना हृदयमे ओकरा राखि अपना आँखि सँ देखह ओ ओकरा सञ्ज
 समागम ओ वयनक हेतु जाह । अत्यन्त सुन्दर अपन मुँह केँ सस सँ विक-
 सित करह । हे विलासिनी ! सूकवि गणकक सुन्दर एहि वचन सँ एतए हित
 होइत छैक ॥

कयासुर—(हँसि मूढ़ी झुलाए) बाह ! बाह !! (नटुआकेँ ओँटी दैत छथि ।)

(नटुआ आश्रयपूर्णक लेत अछि ओ लए विद्याभए गेल ।)

(सभ बहोर भए गेल ।)

[इति प्रस्तावना]

(एही बीच नारद प्रवेश करैत छथि ।)

(देशी राग मे गीत--४)

सबल = उज्जर । उदर = पेट मे । चन्द = वन्दना करैछ । विहिक.....

२५ - आलोकयति शालिनि २६ - स्वहृदि ।

धवल केश भोकारल गात ।
उदर नटीक सुनल बात ।
नगर झण्ड जे जन डार ।
ता सञ्जो उपज धर्म आधार ॥
तीनहुँ भुवन के नहि बन्द ।
बिहिक कुल-पयोनिधि-चन्द ।
नारद सभ कला बिसराम ।
भनए गणक गुणक धाम ॥

दीवारिकः—(प्रविश्य^{२७}) कः कोउध ? (परिक्रम्य) को भवान् ?

धात्रंशः—रे मूढ दीवारिक ! त मां जानासि ? अहं ब्रह्मवि नारदः ।

दीवारिकः—(ससम्भ्रमम्) भअवं ! जमो दे । [भगवन् ! नमस्ते ।]

धात्रंशः—^{२८}तवासदृशफलमस्तु । (दत्तपुत्रत्वा प्रचलितः । ^{२९}कंसासुरास दत्तं
चासीर्वाद पश्येन) —

जटाजूटमध्ये लसद्देवधारा

^{३०}स्फुरत्स्वेमवर्णा च मुक्तानुकारा ।

= विधाताक कुलरूपी समुद्र सौ उत्पन्न चन्द्रमा बिकहुँ । कला बिसराम = सभ
कलाक निवासस्थान ॥

द्वारपाल—(प्रवेशकए) एतए के के अछि ? (टहल) आने के बिकहुँ ?

नारद—रे भूख द्वारपाल ! हमरा नहि जनै छै ? हम ब्रह्मवि नारद बिकहुँ ।

द्वार०—(हड़बड़ाए) भगवन् ! अहाँकेँ प्रणाम करैत छी ।

नारद—तोहूरा अनुग्रह फल होअओ । (ई कहि चलि देलति । कंसासुरकेँ

बेल आसीर्वाद पद्यक द्वारा) —

महादेवक जटाजूटक बीच मे शोभित गङ्गा, चमकैत सोनाक समान
तथा मोतीक समान (चन्द्रकला), अङ्ग मे निवास करैत उद्देवपूर्वक

२७ = परिक्रम्य (आगू-परिक्रम्य'क स्थान मे प्रविश्य' ।)

२८ = तवासदृश । २९ = कंसासुर । ३० = स्फुरत्स्वेमवर्णाञ्च ।

^{३१}भवानीयमुद्दिश्य चाङ्गे वसन्ती

सदा पाशु शम्भोः कृपायुक्तदृष्टिः ॥१॥

कंसासुरः—(ससम्भ्रमम् अर्धे पादाध्वं च कृत्वा^{३२}) मुने ! स्वागतं भवतः ।

धात्रंशः—साम्प्रतं भवदालोकनेन,

अद्युद एक मुनल हमे असुर, मन भेल परम बिरामे ।

देवकितनम तह कंस महीपति ! मन्द ! तोहूर परिनामे ॥२॥

कंसासुरः—(सविस्मयम्) मुने ! तहि कि कर्तव्यम् ?

धात्रंशः—

सावधान भए रहिअ से निक धिक, एखनहि करिअ उपाए ।

नहि तज्जो फेरि पुनु, परत नृपति सुनु, गरुअ पराभव आए ॥३॥

कंसासुरः—(स्वगतम्) सम्यगेवोच्यसे । भद्रम् एतस्य प्रकारं करिष्यामि अहम् ।

धात्रंशः—(पुनः कथयति)—

ई भवानी ओ कृपासँ युक्त दृष्टि सतत रक्षा करओ ॥४॥

कंसासुरः—(हड़बड़ाए मुँह धोवाक जल ओ पएर धोवाक जल उपस्थित करैत)
मुने ! अहाँक स्वागत करैत छी ।

नारद—एखन अहाँकेँ देखला सँ,

कोनो अवसर पर हम एक अद्भुत घनटा मुनल जाहि सँ मन
स्तब्ध रहि गेल । हे मुख कंस दिव्यकीक बेटा सँ तोहूर अन्त होएतहु ॥५॥

कंसासुरः—(चकित होइत) मुने ! तखन की करवाक चाही ?

नारद—सावधान रहबे नीक, एखनहि प्रतीकार फल । नहि सँ बाद मे बड़
पैघ (गरुअ) दुःख आवि खसत ॥६॥

कंसासुरः—(मनहि मन) ठीके कहैत छथि । नीक जकाँ एकर हम प्रतीकार
करब ।

३१ = भवानी (सीत ?) मुद्दिश्य । ३२ = कृत्वा प्रोक्तं च ।

सबतह बड़ थिक पिअ [निअ] जीवन, ताहि करिअ अनुमान ।
दिइ भए दए मन, करब तोहर[जत] मन भल देख निदान ॥४॥

कंसासुर—एवम् । अत्र कः सन्देहः ?

नारद-वचन चित्ति^{३३} निअ मानस, कंस कहल इह बात ।

जे जे अपत होएत देवकी काँ, तकर करब हमे घात ॥५॥

धार्मिक—(साट्टहासम्) मदभिलषितमेवोक्तम् । अवश्यं तत् कर्तव्यम् । (इति निष्क्रान्तः ।)

कंसासुर—(३४) विस्मयमस्तः पुरमागत्य मनस्येव विचार्य भटिति बहिर्भूत्वा प्रतीहारान् आहूय आज्ञापयति) भोः प्रतीहार! देवकी वसुदेवी कारा-
गारं नीत्या सम्यक्तया रक्षणीयौ ।

प्रतीहार—(३५) जं देवो आणवेदि । [मद्देव आज्ञापयति ।] (इति निष्क्रम्य प्रचलितः ।)

नारद—(फेइ कहैत छथि)—सबसँ पेश अपन जीवन थिक, तकर विचार कर
तेँ स्थिर भए मन दए अपन परिचारक सभ केँ सतर्क कर, जाहिँ
उचित प्रतीकार भए सकए ॥४॥

कंसासुर—वेश । एहि मे कोन सन्देह ?

नारदक वचन केँ अपना मन मे विचारि कंस कहलनि जे
देवकीकेँ जे जे सन्तान होएतनि तकरा हम मारि देब ॥५॥

नारद—(ठहाका मारि) हमर इच्छा जएह छल सएह कहलहुँ अछि । अवश्य
से कर (बहार भेलाह)

कंसासुर—(विस्मय करैत अपन द्यूदी आबि मनहि मन विचारि सट दए
बाहर भए द्वारपालसभ केँ बजाए आज्ञा देत छथि) हओ द्वारपाल!
देवकी ओ वसुदेव केँ जहल लय जाए नीक जकाँ राखह ।

द्वारपाल—जे सरकार आज्ञा देथि । (बहार भए चल गेल ।)

३३ = चिन्तनीय मानस । ३४ = तद्विस्मयमनाः पुरमागत्य मनस्येव विचार्य भटिति ।

(एतच्छ्रुत्वा देवकी निःश्वस्य कथयति ।)

(करुणा-मालव-रामे गीतम्—५)

३६ भाइ ! कह कि कएल हमे तोर ॥ध्रुवम्॥

तात-मातु मोहि, सोपि देलक तोहि,

पिशुन-वचन होअ भोर ।

एत दिन एह छल, तोहई करह भल,

करुणा तेजलह मोर ॥

थिकहुँ सहोदर, तेहुँ दया कर,

किए बाँधि देल बनिसार ।

तोहर बहिनि भए, ओतहि रहव गए,

एकरो करह विचार ॥

हित अनहित भेल, कुजन कुमति देल,

३७ ई बुझल दिन भेल वाम ।

विहिक लिखल जे, अबस होएत से,

रहत कथा परिनाम ॥

जाहितह दम हँस, से किए करह कैत,

मोहि नहि सहि दुखभार ।

सुकवि गणक मन, धर धैरज मन,

सहनहि तह परकार ॥

(ई सुनि देवकी निःश्वास लए कहैत छथि ।)

(करुणा मालव रामे गीत—५)

तात मातु = बाप माए । सोपि = समर्पित । पिशुन वचन = दुर्जनक वचन
सँ । भोर = अज्ञानी । भल = तोहीँ हित करैत छलह । करुणा = दया । बनि-
सार = बन्दीवाला, जेल । हित अनहित = जे हित छल जे । हित भए गेल ।
कुजन = दुर्जन । वाम = विपरीत । विहिक = विधाताक । अबस = अवश्य ।
कथा = दुर्योगक अपवाद । जाहिँह = जाहिँ सँ । सहनहि तह = सहले सँ ॥

३६ = यद्देवो । ३७ = भाइ कह कह कि कैल मे तोर ।

३८ = ई बुझल । ३९ = वसुदेव-देवमा समं शासनावासी ।

कंसासुरः—(सक्रोधम्) रे मूढ़ प्रतीहार ! सत्वरं गच्छ ।

(ततः प्रतीहारः सकरुणं वसुदेव-देवकीभ्यां^{३६} समं सासनशालीं प्रति गमनं चकार ।)

इति श्रीश्रीकान्त-विरचितो देवक्याः कंसजनित-विस्मयो
नाम प्रथमोऽङ्कः ॥

अथ द्वितीयोऽङ्कः

(प्रस्तावना)

(पुनर्नेपथ्ये षड्गर्भ-संध्यं शतहृदया देवकी प्रविश्य निःश्वस्य कथयति)—

(गौडीमालवरामे गीतम्—६)

वसुदेव-देवकी देल परबैस ।

निअर सिअर विभु दुसह कलेस ॥

कंसासुर—(क्रोधपूर्वक) रे मूर्ख द्वारपाल ! जल्दी जा ।

(तत्काल द्वारपाल दुःखपूर्वक वसुदेव ओ देवकीक संग जेल
विस बिधा भेल ।)

इति 'श्रीकान्त'क बनाओल श्रीकृष्णजन्मरहस्यो 'देवकीक कंसक द्वारा
आश्चर्यित होएव' नामक पहिल अङ्क समाप्त भेल ॥

द्वितीय अङ्क

(प्रस्तावना)

(फेर नेपथ्य मे लओ गर्भ सौं पीड़ित हृदयवाली देवकी प्रवेश कए
निश्वास लए कहैत छथि)—

(गौडीमालवरामे गीत—६)

निअर = निगड़ (हथकड़ी) । सिअर = (अस्पष्ट) । विभु =

निमग्न आपद् अवधि परान ।

अबिर न एहि तओ देखिअ तरान ॥

पैसव-वेदन सहि होइअ हरान ।

निकरन मिक नहि धएल धैआन ॥

सञ्चित गर्भ कएल कत आस ।

उतपति कालहि कएल निरास ॥

सुकवि यणक मन दए एहो भान ।

नारद-वचन करिअ अनुमान ॥

(लाञ्छनः पुनरागत्य प्रवेशं नाटयति ।)

लाञ्छनः—(परिक्रम्यावलोक्य च) अहो ! शिव शिव !! कथमियमवस्था ?

देवकी—(ससम्भ्रमं प्रणिपत्य गीतेन कथयति)

(कहना मालव-रामे गीतम्—७)

मुनि हे ! कि हुमे करब परकारे ।

चिन्ता-जलधि मगन मोर मानस,

कथोन परि होएत सैतारे^{३७} ॥

विशाल । कलेस = दुःख । निमग्न = निमग्न (डूबल) । अबिर = जल्दी ।
तरान = रक्षा । निकरन = निर्दय (कंस) । सञ्चित = संचित कए,
पोसि । उतपति = जन्म ॥

(नारद फेर आवि प्रवेशक अभिनय करैत छथि ।)

नारद—(टहलि ओ देखि) अहो ! हाय हाय !! कोना एहन दशा भए गेल ?

देवकी—(हृदयद्वारा प्रणामक हेतु स्वसि गीतद्वारा कहैत छथि)—

(कहना मालवराम मे गीत—७)

परकारे = उपाय । चिन्ता-जलधि = चिन्ताकरी समुद्र मे हुमर मन डूबल

३६ - सैतारे ।

जुग सभ जामिनि कठिन समाधिअ,
 के जन कएल कत पाये ।
 एहनि करमहिनि हमे सनि के चनि,
 जे सह एतेक सन्तारे ॥
 तोहे नारद मुनि, हमे निरदिश मुनि,
 कहिअ तेहन उपदेश ।
 जाहि तह सँतरिअ अचिर दुगह दुख,
 न रह कलेसक लेखे ॥
 दूषन वीनु हमरि एहु दुर्गति,
 कतेक सहब दुखभारे ।
 *तनय-हरन तह मरन लोक धिक,
 *ई बुझि करिअ परकारे ॥
 सुकवि भणक भन, धर धरल मन,
 सब दिन न रह समाने ।
 नारद-वचन धरिअ गुन-भातन,
 जे भल देखत निदाने ॥

धाम्रसः—देवकी ! मा सीध । महान् उपायोऽस्ति । तच्छृणु—

अछि । सँतारे = उद्धार । जामिनि = राति । के जन = गर्भ मे कोन पापी
 व्यक्ति अछि । करमहिनि = अमागति । निरदिश = असहाय । सँतरिअ
 = पार होइ । अचिर = जल्दी । कलेसक लेखे = दुखक लेखी नहि रहए ।
 दूषन वीनु = विनु दोषे । तनय-हरन तह = पुत्रक हरण सँ । निदाने =
 उचित प्रतीकार ॥

नारद—देवकी ! दुख अनु करो । एकर पैघ उपाय अछि । से सुनु—

४० . तनय हरन त हमर न लोक धिक । ४१ . ई बुझि ।

कहल नारद देवकी सुनु, आन नहि परकार ओ ।
 धरह दूढ़ हरिचरण सरण, सँतार तेहि दुखभार ओ ॥६॥
 (इत्युक्त्वा प्रचलितः ।)
 (प्रस्तावना समाप्त)
 (ततो वसुदेवो देवकी च हृदि विमृश्य हरिचिन्तने चित्तं निवेश्य गीतेन
 कथयतः*१ ।)
 (आशावरी-रामे गीतम्—८)
 मन अनुचिन्त देवकी वसुदेव ।
 दूढ़तर भगति वामोदर सेव ॥
 दुख सागर सँ करिअ उद्धार ।
 तोहे सन जगतक कथोन कडहार ॥
 परल पराभाव रचिअ उपाए ।
 चिन्तामनि अनुगत चित लाए ॥
 करुणामय अनु होइअ भोर ।
 सब तेज सरण धएल हमे तोर ॥
 जातक-हरन सहल नहि जाए ।
 देखि मुख दरबरि होइअ लहाए ॥

हे देवकी ! दोसर उपाय नहि अछि । अहाँ कृष्णक चरणको कसिकए
 गहू, जे दुखक भार सँ पार करत ॥६॥

(ई कहि चलि गेलनि ।)

[प्रस्तावना समाप्त]

(तत्र वसुदेव ओ देवकी मन मे विचारि श्रीकृष्णक चिन्तन मे मनको
 लगाए गीतक द्वारा कहैत छथि)—

(आशावरी-रामे गीत—८)

अनुचिन्त = ध्यान करैत छथि । दूढ़तर = अधिक निश्चितरूपे । वामो-
 दर = कृष्णक । कडहार = कर्णधार, शैवैया । पराभाव = दुःख मे । चिन्ता-

*१—कथयति ।

सुकवि गणक मन दए एहो गाव ।
भगति जगत गति के नहि पाव ॥
(ततः श्रीकृष्णः कुरुया गुरुद्वयः समागतः ।)

(देशाख-रागे गीतम्-६)

देल गुरुदासन प्रभु परवैसे ।
अगत भगत—जन सून कलसे ।।
पीत वसन तनु उपज निनेहे ।
सजल जलद जनि दामिनि रेहे ॥
करतल शीख एहन सन भासे ।
पङ्कज पर इन्दु बएल निवासे ॥
पदम पानि देखि होअ मन भासे ।
पङ्कज सौ पङ्कज निरमान ॥
सुकवि गणक नहि संशय आने ।
हिनि तह अचिरहि होएत तराने ॥

(ततो देवकी माधवमवलोक्य प्रदक्षिणं कृत्वा प्रोक्तवती ।)

देवकी—भो ! अलोक्यताथ ! मयि^{४४} प्रगोद । नाभ्याः प्रकारः ।

मनि = चिन्ता सौ भरल । अनुगत = भक्त । श्रीर = अज्ञानी । जत कहरन
= पुत्रक हरण । दरवरि = भटपट ॥

(तत्र श्रीकृष्ण दयापूर्वक गुरुद्वय पर चहुल आवि गेलाह ।)

(देशाख-राग मे गीत—६)

गुरुदासन = कृष्ण । पीत वसन = पीयर वस्त्र । सजल = चन्दमा ।
पानि सौ भरल मेघ मे जेना बिजलीकाक रेखा रहए । इन्दु = चन्दमा ।
पदम = कमल । पानि = हाथ मे । पङ्कज = कमल सौ कमल बहराईत हो । हिनि
तह = हिन कहि सौ । अचिरहि = अविलम्ब । तराने = रक्षा ॥

(तत्र देवकी कृष्णके देखि प्रदक्षिण कए कहलथिन) —

देवकी—हे तीनूलोकक मालिक ! हमरा पर प्रसन्न होउ । दोसर उपाय नहि
अछि ।

(तेनाऽनन्तरं नारायणेनोक्तं पद्येन^{४५} ।)

श्रीकृष्णः—

मातः ! लेवमवाकुरु प्रतिपलं भविष्यते सादरं
चेतस्व विनिधेहि सासनगृहे^{४६} दीपास्त्वमङ्गीकुरु ।
^{४७}यावत् त्वज्जठरे विशामि सततः प्रोदभूय नशालयं
मीरथा शैलवगाचरामि सहसा कंसाधमोत्सारणम् ॥६॥

(इति श्रुत्वा देवकी साश्रु कथयति ।)

देवकी—प्रभो ! मज्जठरे निवासा कदा करिष्यसि ?

श्रीकृष्णः—(विहस्य गच्छेन) मातः ! तव गर्भतो बलभद्रावतारोऽहमेव प्रथमं
योगनिद्राव्यपदेशेन रोहिणी-गर्भमाविशन् सङ्कूर्षणपदमालम्ब्य^{४८},
ततोऽष्टमे गर्भे अहमप्यागमिष्यामीति । इति सत्यं जानीहि ।
चिन्तां दूरीकृत्य तावत् करामारे वासमङ्गीकुरु । (इति निष्क्रान्तः)।
(तच्छ्रुत्वा देवकी समुलसितहृदया तूर्णो बभूव ।)

(तत्र श्रीकृष्ण पद्यद्वारा कहलथिन ।)

श्रीकृष्ण—हे माए ! अहाँ दुख दूर करू, हरदम आदरपूर्वक हमर चिन्तन मे
मनके लगाल ओ एहि जहल मे राति सब के बिताल यावत् धार
हम अहाँक पेटमे पैसीत छी, उत्पन्न भए नन्दक घर जाए, बचपन
बिताए सहसा पापी कंसक नाश करैत छी ॥६॥

(ई सून देवकी आश्चर्य भए कहैत छथि ।)

देवकी—हे प्रभु ! अहाँ हमरा पेट मे कहिआ निवास करब ?

श्रीकृष्ण—(हेति गद्यक द्वारा) हे माए ! अहाँक गर्भ सौ बलभद्रक अवतार लए
हमही पहिने योगनिद्राक आजे रोहिणीक गर्भ मे पैसि सङ्कूर्षण
कहाए, तखन आठम गर्भ मे रखा हम आएब । ई सत्य जानू । चिन्ता
दूर कए तावत् जहल मे गाम करू । (बहार भए गेलाह ।)

(ई सून देवकी उल्लामयुक्त हृदय भए चुप भए गेलीह ।)

(अथ छन्दः)

भगति रति मति, कएल दूढ़ गति, हरिचरण धरि आस ओ ।
 लेल सारङ्गपानि मन गुनि, आए गर्भ निवास ओ ॥
 १० छुटल चिन्ता छीन-तनुगत जुटल हृदय हुलास ओ ।
 ११ गर्भ समुचित भइए किछु दिन, पुरल-पुरन मास ओ ॥१॥

(अथ गीतम्-- १०)

भगति कएल दूढ़ जाने ।
 मन बुझि गति नहि आने ॥
 बाहुल मानस आसे ।
 हरि लेल गर्भ-निवासे ॥
 पसरल हृदय हुलासे ।
 पुरल-पुरन मासे ॥
 नभस सुदीवस भेला ।
 देवकि वेदन लेला ॥
 सुकवि गणक इह भाने ।
 तलनुक समय बखाने ॥

(छन्दः)

रति = अनुपम । दूढ़ गति = स्थिर रीति । सारंगपानि = श्रीकृष्ण ।
 छीन-तनुगत = दुर्बल शरीर मे स्थित । हुलास = उल्लास । पुरन
 = पूर्ण ॥७॥

(गीतसं०—१०)

हरि = कृष्ण । पुरनमासे = पूर्णमास, दशम मास । नभस सुदीवस =
 वरसातक सुन्दर दिन । वेदन = प्रसववेदना ॥

(अथ प्रसवकाल-वर्णनम्)

निविड़ नभ संघट्ट मुत घन, घोर गरज सदप्य ओ ।
 वलित दलित अँधार ११ सहुदिस, तलित दपि तरप्य ओ ॥
 सिङ्गुर शिल्ली रव विभीषम, अधिक दाहुल सोर ओ ।
 नास बतहु न घोर संवर, मोर शब्द अनोर ओ ॥१॥

अथ गीतम्--११

नभ गरजए घन घोरे ।
 मोरक शब्द अनोरे ॥
 रइनि महा भर भीमा ।
 आदि अँधारक सीमा ॥
 वरिसए वारिद धारा ।
 एहि पूरित महि सारा ॥
 भेक सिंगुर कर गाने ।
 योगिनि - निकर भयाने ॥
 सुकवि गणक इह गाई ।
 एहि अवतारल कन्हई ॥

(प्रसवकालक वर्णन)

निविड़ = सघन । नभ = आकाश मे । संघट्ट = टक्कर । घन = मेघ ।
 घोर = अतिशय । सदप्य = दर्प सहित । वलित = सहित । दलित =
 पसरल । तलित = विजलोका । रव = स्रग्ध । विभीषम = भयानक ।
 दाहुल = वेड । नास = डरे । मोर शब्द = मयूर सज्ज । अनोर =
 अनुपम ॥५॥

(गीत-११)

नभ = आकाश मे । रइनि = राति । भीमा = भयानक । वारिद =
 मेघ । महिसारा = सम्पूर्ण पृथ्वी । भेक = वेड । योगिनिकर = योगि-
 नीक समूह ॥

(अथोत्पत्तिकालवर्णनम्)

योग शोभन रोहिणीयुत, लग्न उत्तम कर्क ओ ।
 "ताहु" सुरगृह, स्वगृह शशधर, चार दोसर अर्क ओ ॥
 मास नभ—यसु तीथि अष्टमि, कृष्णपक्ष विशाल ओ ।
 देवकी की तनय भए अवतरल श्रीगोपाल ओ ॥१॥

(अथ गीतम्—१२)

हरि हेरि दुख दुरि नेला ।
 पुलकित मानस भेला ॥
 "फुजल" बन्धन दुड़ डोरे ।
 मन्दिर भेल हजोरे^{२३} ॥
 कर जोरि कहलन्हि जाई ।
 समरिअ सहय सभाई ॥
 जानि पाओत जओ^{२४} तोही ।
 धाओत अरि निरमोही ॥
 करे^{२५} गहि अङ्कुम लेला ।
 साहस परिनत भेला ॥
 सकवि गणक इह भाने ।
 हिनि छाड़ि गति नहि आने ॥

(आव उत्पत्तिकालक वर्णन)

शोभन = शोभन नामक योग । रोहिणी नक्षत्र सँ युक्त । सुरगृह = बृह-
 स्पति । स्वगृह = अपना घर में (कृष्णली में निर्धारित घर में) । शश-
 धर = चन्द्रमा । चार = सुन्दर । अर्क = सूर्य । नभयसु = भादव ॥१॥

(गीत—१२)

हेरि = देखि । पुलकित = प्रसन्न । दुड़ डोरे = सज्जत डोरी । मन्दिर
 = घर । समरिअ = समूह । सभाई = कृष्ण । अरि = शत्रु । करे =
 हाथ सँ । अङ्कुम = कोरा में । साहस = उसाह ॥

११—सह सुरगृह, स्वगृह शशधर । १२—फुजल । १३—हजोरे ।

श्रीकृष्णः—(एतच्छ्रुत्वा स्वरूपसंहरणं चकार ।) प्रोक्तं च लभ्यते । मां
 नीत्वा नन्दालये संस्थाप्य, कन्वकां गृहीत्वा सानुसारमागच्छ ।

(यसुदेवस्तथा करोति ।)

आव घरि हरि कएल कर पर, पुरल अधिक "जलोच ओ ।
 "उपर अहिपति भोग पसरल, न होअ तनु जलजोग ओ ॥१०॥

(अथ गीतम्—१३)

बुलले पाओल दुआरे ।
 सएन मगत प्रतिहारे ॥
 तपन—सुता भेलि थाहे ।
 "पसर" गगन निरवाहे ॥
 कले^{२६} बले^{२७} हरि घरि देला ।
 तसु तनया गहि लेला ॥
 "ककरहु" नहि भेल जाने ।
 वसुदेव कएल पमाने ॥

श्रीकृष्ण—(ई सुनि अपन रूप समेटि लेल) जे हम कहने छलहु, से आव अहाँ
 पायि रहल छी । हमरा लए नन्दक घर में राखि, ओतए सँ कन्या
 लए हमर कहलक अनुसार^{२८} आवि जाउ ।

(यसुदेव तहिना करैत छथि ।)

कृष्णकेँ थार में राखि, हाथ में लए विदा भेलाह, अत्यधिक मेघ
 उमड़ि आएल, ऊपर में घोषनाम अपन पण पसारि देल, तेँ कर्वाक
 जलक स्पर्श^{२९} तक नहि भेलनि ॥१॥

(गीत—१३)

सएन = सुतवा में । प्रतिहारे = द्वारपाल । तपनसुता = यमुना । निर-
 वाहे = मेघ । तसु तनया = हुनक पुत्रीकेँ । पमाने = प्रस्थान । देखिहि

२४ - जमीन (?) । २५ - उद अहिपति । २६ - पसरल । २७ - ककरहु ।

देवकि देखिहि देला ।
मुदित मानस [तब] भेला ॥
पसरल सेह परिपाटे ।
मुन्दित भेल कपाटे ॥
रोदन मन अनुमानी ।
जामल जामिनि जानी ॥
सुकवि गणक इह भाते ।
परिमत भेल धेआने ॥

(अथ छन्दः)

वाए रक्षक पाट लाओल, सुनिअ प्रभु नवराज ओ ।
देवकी गृह शिशुक रोदन, सुनल अछि हुमे आज ओ ॥१॥
(इति श्रुत्वा कंसासुरः सोह्लासम्^{५५} उक्तवान् ।)

कंसासुरः—ताहि सिद्ध तः समीहितम् । (इति^{५६} सनम्भूमम् उत्थाय प्रच-
लितः ।)

(अथ छन्दः)

गमन-भर भूषण्ड^{५७}-मण्डल, डोल भूधर गात ओ ।
भेल अति निर्वीर्य चौदिस, होत उल्कापात ओ ॥

= देवीरूपा कन्या । पसरल = पुर्यवत् सभ किछु पसरिगेल । मुन्दित =
वन्द । कपाट = केवाड़ । जामिनि जानी = पहचदार ।

रक्षक दौड़ राजद्वार पहुँचल ओ बाजल—हे राजा ! देवकीक घर मे
आइ हम वञ्चाह कानव सुनल अछि ॥१॥

(ई सुनि कंस उल्लासपूर्वक बजलाह ।)

कंस—तखन त हमरालोकनिक अभीष्टे सिद्ध भए गेल । (हरवड़ाए ऊठि चलि
देसनि ।)

(छन्दः)

गमन-भर = चलबाक भार सँ । भूधर गात = पहाड़क अऊँ । निर्वीर्य

५५ - सोह्लासः उक्तं च तद्दि । ५६ - स सप्तजमोदथाय । ५७ - भूषण्ड मण्डल ।

मोद मत्त सरारि अतिबल, रोसे^{५८} खलु पथ धाए ओ ।
द्वय दवित कंस निर्दय, देवकी-गृह जाए ओ ॥२॥

(देवकी ससम्भ्रमम् उत्थाय कंसासुरचरणे प्रणिपत्य गीतेन कथयति -)

(गीतम्-१४)

हे दादा ! न करहु मोर निदाने ॥ध्रु०॥

जतन आस जत अङ्कुर अङ्कुरल
भँगलहु लाए पथाने ।
कि हमे कएल सोर^{५९}, जम सम तोहे मोर
कंस ! तेजहु अजाने ॥
सन्तति हरन सहन^{६०} के कर ब्रत,
हमर अवस अवसाने ।
हमहि सत्ताए कओन फल पओवह,
तनय देहु वन दाने ॥
हित भए अरि सरि, काज करहु करि,
पिशुन-बचन अनुमाने ।
बेहु लिखल रहत सकर फल पाबिअ,
समर जयत एह जाने ॥

= भूकम्प । मोदमत्त = आनन्दे चर । सरारि = दैत्य कंस । रोसे =
क्रोध सँ । द्वय दवित = बसण्ड सँ भरल ॥१॥

(देवकी हरवड़ाए ऊठि कंसासुरक पएर पर खसि गीतक द्वारा कहैत
छथि -)

गीत-१४

दादा = भाए । निदाने = कुतंति । जतन आस = घरन ओ आशा सँ । भँग-
लहु = फोड़लहु । पथाने = पाथर पर । जम सम = समराजक समान । सन्तति-
हरण = सन्तानक हरण । अवस = निश्चय । अवसाने = अन्त, मृत्यु । अरि सरि

५८ - सोर । ५९ - सहन के ।

जातक-शोक जेहन जननी काँ,
ताहि करय अनुमाने ।
अपने जखीँ उनमाद भरल छह,
पूछि देखह वर आने ॥
माया मोह तोहेँ सभ तेजलह,
ठामहि रहत गुमाने ।
निरख्य हिरदय उपज दया नहि,
(तथापि कंसामुरा सखीधं प्रचलितः ।)

(अथ गीतम् - १५)

कंस भवत धमि गेला ।
सभ गन संकित भेला ॥
मद मातल अगेआनी ।
करतल छएल भवानी ॥
सट अलोपल तेजि पानी ।
सुनल गगन निरवानी ॥
कि करह कंस गुमाने ।
भेल आन सँ आने ॥
से अवतरलह आजे ।
जे करत तोहस इलाजे ॥

= शत्रुक सदृश । पिष्टुत = चूगला, दुष्ट । जातकशोक = पुत्रशोक । उनमाद
= मानसिक असन्तुलन । हिरदय = हृदय मे ।

(तयो कंसामुरा सखीधं चलि देलनि ।)

(गीत-१५)

अगेआनी = अज्ञानी । करतल = हाथ मे । भवानी = यशोदाक पुत्रीरूप
भगवतीके । सट अलोपल = तुरत युक्त भेलोहि भगवती । तेजि पानी = कंसक

६६ - निरवए हवए संखी दया नहि । ६४ = हट

मूढ़ विकल सुनि भेला ।
लाज लम्बित फिर गेला ॥
अनुचित कएल विचारे ।
विहि सखीँ नहि परकारे ॥
गणक भनए मन लाई ।
नन्द-घर बाजु बधाई ॥

(नन्दाश्रमे यशोदा-केशोरमालोक्य गोप-जना समुलसित-हृदया गीतेन
कथयति-)

सोहर गीतम् - १६

पद-१ - हरि यदुनाथ यशोमति, अञ्जुम लाओल रे ।
ललना, जनि पथ पड़ल परसमनि, निरधन पाओल रे ॥
छन्द- घन पाए निरधन, गगन मन, आनन्द उर^{६५} न समाए ओ ।
कए हुरख मन, गन्धर्व-गन, अवतरखी यदुवर जाय ओ ॥
पद-२ - पय लए तोरित यशोमति, तनय नहाओल रे ।
ललना, सुनि नन्द दगरिनि सहित, घाए गृह आएल रे ॥

हाथ सँ छुटिके । गगन निरवानी = आकाशवाणी । इलाजे = प्रतीकार । मूढ़
= मूर्ख कंस । विहि सखी = । । सँ ॥

(नन्दक घर मे यशोदाक पुत्रके देखि गोपीसभ उत्साह सँ भरल हृदय-
वाली गीतक द्वारा कहैत छथि -)

(सोहर गीत-१६)

पद-१ - यदुवंशक नाथ श्रीकृष्णके यशोदा कोर मे लेलनि, जेना बाट पथ
पड़ल स्पर्शमणिके निर्यन व्यक्ति पाबि गेल हो । उर = छाती मे ।
गन्धर्व = देवताक नायक ।
पद-२ - पय = दूध । तनय = पुत्र । दगरिनि = चमेनि । यदुवंशकीरसमुद् =
यदुवंशकपी दूधक समुद् सँ ।

६५ - उर समाए ।

छन्द — गृह आए नन्द आनन्द सोल ११ सुत, मोहि आनन्दकन्द ओ ।

यदुवंश-श्रीरसमुक् सओ जनि, प्रकट दोसर चन्द ओ ॥

पद-३ - नार-छिनाउनि दगरिनि, पाओल सोहर रे ।

ललना, जुगे जुगे जावओ यशोमति, बालक तोहर रे ॥

छन्द — तोहर यशोमति तनय अनुपम, देखिअ जनुकुलराज ओ ।

अति उधव धाव हुलास गोकुल, द्वार दुन्दुभि बाज ओ ॥

पद-४ - सुर नर मुनिगन हरखित, जय जय शबद भयो रे ।

ललना, कंसदलन कह नन्द-घर हरि अवतार लयो रे ॥

छन्द — अवतार लए हरि हरओ दारिद, दुख शोक सत्ताप ओ ।

१० उतपन्न भए उद्योग कए प्रभ, चौदिग बलित प्रताप ओ ॥

पद-५ - घर घर खलिनि-गन मिलि, सोहर गाओल रे ।

ललना, हय गज मनि मानि पट नट भट पाओल रे ॥

छन्द — पट पाए नट भट कोटि दीन्हो, लक्ष लक्ष सुरक्ष ओ ।

नन्दक याचक जगत दारिद, दारि कीन्हो दक्ष ओ ॥

पद-६ - कोटि कोटि याचक-जन, ११ आओर गुनिगन रे ।

ललना, शुभ शुभ शुभ धुनि सोहर सुकवि लाल भन रे ॥

छन्द — भन लाल कइए बेहाल गोकुल, सोल सकल सनाय ओ ।

तुअ तुझ पुण्य प्रसाद बालक, भेल विभवन-नाथ ओ ॥

पद-३ - नार-छिनाउनि = बन्धाक ढोकीक ताल कटनिहारि । सोहर = टाका ।

अनुपम = अनुलनीय । दुन्दुभि = बाजा ॥

पद-४ - सुर नर = देवता ओ मनुष्य । शबद = शब्द । कंसदलन = कंसके मारनिहार । हरि = कृष्ण । दारिद = गरीबी । उतपन्न भए = जन्म लए । चौदिग बलित = चारु दिस चमकैत ॥

पद-५ - हय = घोड़ा । गज = हाथी । पट = वस्त्र । नट भट = नट आ ओ बीर सभ । याचक = मंडविहारक दरिद्रता के दूर करबा मे पट ।

पद-६ - बेहाल = आनन्दमग्न । तुझ पुण्य प्रसाद = अतिशय पुण्यक कृपा से ।

११ - श्री सुत । १० - ललना उरपन्न भए उद्योग कए चौदिगावलित प्रताप ओ ।

१२ - ओ गुनिगन रे ।

(द्वितीय-सोहर-गीतम - १७)

११ निज जन गन शुभकारक, गोकुल-तारक रे ।

जनमल जगत उधारक, १० अरु प्रतापालक रे ॥ ललना धु ॥

नन्द-घर उधव धावए, सभ मिलि गावए रे ।

ब्रजरानी धुन गावए, लाखनि पावए रे ॥

नट भट पट कर करखित, सुर ११ नर हरखित रे ।

यदुकुल होअ फुल बरखित, अति आमरखित रे ॥

आज नन्दक पुर छाजए, चहुदिस १२ जय जय रे ।

यशोमति कोर हरि १३ राजए, दुन्दुभि साजए रे ॥

हरि हेरि यशोमति मन जनि, पाओल परसमनि रे ।

सुकवि लाल कह १४ रभसनि, निजपति देखबनि रे ॥

येनेन्दावि-समस्त-देवतगणाः सन्तोषिताः सर्वदा,

१५ गो गोवर्द्धन-धारको ॥

१६ नन्दानन्द-विवर्धनो मधुरिपु १७ ईशाच्छिबं श्रेयसे ॥ ७५ ॥

(द्वितीय सोहर गीत - १७)

निजजन गन = अपना लोक सभक । तारक = उधार कएनिहार । भट = बीर । पट कर करखित = वस्त्रके हाथसे बिचलनि (पओलनि) । सुर = देवता । आमरखित = आनन्दमग्न । राजए = शोभित होइत छथि । दुन्दुभि = बाजा । परसमनि = स्पर्शमणि (पारस) । रभसनि = शीघ्रता से ॥

जे सदखन इन्द्र आदि देवतालोकनिके सन्तुष्ट कएल, जे गोवर्द्धन पर्वत के धारण कएल, जे सदिखन इन्द्र आदि देवतालोकनिके सन्तुष्ट कएल, जे गोवर्द्धन पर्वत के धारण कएल, नन्दगोपक आनन्दके वदओनिहार, मधुदेश्यक शत्रु (भगवान् कृष्ण) अहोला-कनिक अभ्युदयक हेतु कल्याण देय ॥ ७५ ॥

११ - निज जन गन शुभकारक गोकुल । १० - उधार करिअ प्रतिपालक रे ।

१२ - सुर नर मुनि हरखित रे । १३ - चहुदिस जय रे । १४ - हरि राए । १५ - रभस मिल पति । १६ - को । १७ - (रिक्त स्थान नहि छोड़ल अछि ओ अगिला पौरी १७ इलाक बुसल गेल अछि ।) ७५ - रिपुवधायाच्छिबं ।

(अमङ्गल-निवारणार्थं पूतना-शकट-यमार्जुन-केशी-काली-कुवल-
यापीड-चाणूर-मुष्टिक-प्रभृति-कांसवधोऽ^{७६}सन्दिशतः ।)

रचितं जन्मरहस्यं गणकाधिपेन रामरसिकेन ।

भवतु सुखाय जनानां सदसि सदा नृत्यकालेषु ॥६॥

इति श्री शङ्खला प्रसिद्ध श्रीकान्त-विरचितं श्रीकृष्णजन्मरहस्यं
समाप्तम् ॥

(अमङ्गल र्त्तं वचनैवाक हेतु पूतना, शकटासुर, यमलार्जुन, केशी, काली-
नाग, कुवलयापीड हाथी, चाणूर पहलमान, मुष्टिक पहलमान इत्यादि सहित
कांसक वध नहि देखाओल गेल ।)

महान् ज्योतिषी (गणकाधिप), भगवान् रामक रसिक एहि जन्मरहस्यक
रचना कएल । ई कृति सभा में नृत्यक समय में सतत लोकसभक सुखक हेतु
रहओ ॥६॥

इति श्रीशङ्खला प्रसिद्ध श्रीकान्तक बनाओल श्रीकृष्णजन्मरहस्य
नाटक समाप्त भेल ॥

७६ • वधो संसृज्जिता ।

